www.ijarp.com ISSN 2456-9992 Page: 01-14

International Journal Advanced Research Publications

Review Article

Volume: 02
Issue: 07

सम्राट अशोक के धम्म की अवधारणा : एक दार्शनिक एवं नैतिक विश्लेषण

कु. कनिष्का*[1] , डॉ. दुर्वेश[2]

[1]पी एच डी शोध छात्रा, कला एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय,मेरठ-250002, उत्तर प्रदेश, भारत

[2]सहायक आचार्य, कला एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय,मेरठ-250002, उत्तर प्रदेश, भारत

Article Received: 28 May 2026, Article Revised: 16 June 2026, Published on: 06 July 2026

***Corresponding Author: कु. कनिष्का**

पी एच डी शोध छात्रा, कला एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय,मेरठ-250002, उत्तर प्रदेश, भारत

Doi: https://doi-doi.org/101555/ijarp.1519

शोध-सार

सम्राट अशोक भारतीय इतिहास के उन महान शासकों में अग्रगण्य हैं जिन्होंने शासन को केवल राजनीतिक शक्ति का माध्यम न मानकर उसे नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की स्थापना का साधन बनाया। कलिंग युद्ध के उपरांत अशोक के जीवन में आए वैचारिक परिवर्तन ने उनके धम्म की अवधारणा को जन्म दिया, जिसका मूल उद्देश्य समस्त प्रजा के नैतिक उत्थान, सामाजिक समरसता, धार्मिक सहिष्णुता तथा लोककल्याण की स्थापना था। अशोक का धम्म किसी संप्रदाय विशेष का धर्म न होकर एक सार्वभौमिक नैतिक आचार-संहिता था, जिसमें अहिंसा, दया, करुणा, सत्य, क्षमा, माता-पिता एवं गुरुजनों के प्रति सम्मान, सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता तथा प्राणिमात्र के कल्याण जैसे मानवीय मूल्यों को विशेष महत्व दिया गया।

प्रस्तुत शोध-पत्र में सम्राट अशोक के धम्म की अवधारणा का दार्शनिक एवं नैतिक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में अशोक के शिलालेखों एवं स्तंभलेखों के आधार पर धम्म के मूल तत्त्वों का विवेचन करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि अशोक का धम्म बौद्ध धर्म से प्रेरित होते हुए भी उससे व्यापक एवं व्यावहारिक स्वरूप रखता था। इसमें शासन, समाज और व्यक्ति के मध्य नैतिक संतुलन स्थापित करने का प्रयास परिलक्षित होता है। शोध में यह भी प्रतिपादित किया गया है कि अशोक के धम्म का मूल स्वरूप सार्वभौमिक नैतिकता पर आधारित था, जो आज के बहुसांस्कृतिक एवं

वैश्विक समाज में भी समान रूप से प्रासंगिक है। यह अध्ययन अशोक के धम्म की दार्शनिक पृष्ठभूमि, नैतिक मूल्यों तथा समकालीन संदर्भों में उसकी उपयोगिता का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द (KEYWORDS): सम्राट अशोक, धम्म, दार्शनिक चिंतन, नैतिक मूल्य, अहिंसा, करुणा, धार्मिक सहिष्णुता, अशोक के अभिलेख, लोककल्याण, बौद्ध दर्शन, मौर्य साम्राज्य।

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में सम्राट अशोक का व्यक्तित्व अत्यंत विशिष्ट एवं प्रेरणादायी माना जाता है। वे मौर्य साम्राज्य के तृतीय एवं सर्वाधिक प्रतापी शासक थे, जिन्होंने न केवल राजनीतिक दृष्टि से भारतीय उपमहाद्वीप को एक विशाल साम्राज्य के अंतर्गत संगठित किया, बल्कि नैतिक शासन एवं लोककल्याण की ऐसी परंपरा स्थापित की, जिसने भारतीय इतिहास को नई दिशा प्रदान की। अशोक के शासनकाल में मौर्य साम्राज्य अपनी चरम सीमा पर पहुँचा, किन्तु उनकी वास्तविक महानता उनके साम्राज्य-विस्तार में नहीं, बल्कि उनके नैतिक एवं मानवीय दृष्टिकोण में निहित है।अशोक के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण मोड़ कलिंग युद्ध (लगभग 261 ईसा पूर्व) के बाद आया। इस युद्ध में लगभग एक लाख लोगों की मृत्यु हुई, डेढ़ लाख लोग बंदी बनाए गए तथा असंख्य लोग विस्थापित हुए। युद्ध की विभीषिका और मानवीय त्रासदी ने अशोक के हृदय को गहराई से प्रभावित किया। उन्होंने अनुभव किया कि विजय का वास्तविक अर्थ रक्तपात और विनाश नहीं, बल्कि मानवता, शांति और नैतिकता की स्थापना है। यही आत्मबोध उनके जीवन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन का कारण बना।

कलिंग युद्ध के पश्चात अशोक ने दिग्विजय के स्थान पर "धम्म-विजय"को अपनाया। उन्होंने यह घोषणा की कि भविष्य में उनकी सबसे बड़ी विजय नैतिक विजय होगी, न कि सैन्य विजय। इस परिवर्तन ने उनके शासन की दिशा और स्वरूप दोनों को बदल दिया। उन्होंने राज्य संचालन को नैतिक मूल्यों पर आधारित किया तथा प्रजा के नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास को शासन का प्रमुख उद्देश्य बनाया।

अशोक द्वारा प्रतिपादितधम्मकिसी संकीर्ण धार्मिक सम्प्रदाय का नाम नहीं था। यह न तो केवल बौद्ध धर्म का प्रचार था और न ही वैदिक धर्म का विरोध। वास्तव में धम्म एक सार्वभौमिक नैतिक जीवन-दर्शन था, जिसका उद्देश्य सभी मनुष्यों के बीच सद्भाव, सहिष्णुता, दया, सत्य, करुणा, अहिंसा और लोककल्याण की भावना को विकसित करना था। इसमें धार्मिक कट्टरता के स्थान पर सह-अस्तित्व तथा कर्मकाण्ड के स्थान पर सदाचार को महत्व दिया गया।अशोक के शिलालेख एवं स्तंभलेख इस बात के साक्ष्य हैं कि उन्होंने धम्म को राज्य की नीति के रूप में नहीं, बल्कि जीवन-मूल्यों के रूप में स्थापित किया। उनके अनुसार किसी भी राज्य की स्थिरता केवल सैन्य शक्ति से नहीं, बल्कि नैतिक नागरिकों एवं न्यायपूर्ण

शासन से संभव है। इस प्रकार अशोक का धम्म भारतीय इतिहास में नैतिक शासन (Ethical Governance) की एक अनूठी अवधारणा प्रस्तुत करता है।वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, जब मानव समाज हिंसा, धार्मिक असहिष्णुता, पर्यावरणीय संकट, नैतिक पतन तथा सामाजिक विघटन जैसी समस्याओं का सामना कर रहा है, अशोक का धम्म पुनः अत्यंत प्रासंगिक हो उठता है। शांति, सहिष्णुता, करुणा तथा मानवीय मूल्यों पर आधारित उनका दृष्टिकोण आज भी विश्व मानवता के लिए प्रेरणास्रोत है।

धम्म की अवधारणा

सम्राट अशोक के अभिलेखों में प्रयुक्त "धम्म"शब्द भारतीय इतिहास एवं दर्शन का अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। सामान्यतः धम्म शब्द का संबंध बौद्ध धर्म से जोड़ा जाता है, किन्तु अशोक के संदर्भ में इसका अर्थ इससे कहीं अधिक व्यापक है। अशोक ने धम्म को किसी विशेष धार्मिक सम्प्रदाय, पूजा-पद्धति अथवा कर्मकाण्ड तक सीमित नहीं रखा। उनके लिए धम्म मानव जीवन के नैतिक एवं सामाजिक आदर्शों का पर्याय था।अशोक के धम्म का मूल उद्देश्य समाज में नैतिक अनुशासन स्थापित करना तथा विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक वर्गों के बीच सद्भाव उत्पन्न करना था। उन्होंने स्पष्ट किया कि वास्तविक धर्म बाह्य अनुष्ठानों में नहीं, बल्कि मनुष्य के श्रेष्ठ आचरण में निहित है। इसलिए उन्होंने यज्ञ, बलि अथवा कर्मकाण्ड की अपेक्षा दया, करुणा, सत्य, अहिंसा, दान, शील तथा संयम जैसे नैतिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया।

धम्म का एक महत्वपूर्ण पक्ष धार्मिक सहिष्णुता था। अशोक ने अपने द्वादश शिलालेख में स्पष्ट कहा कि किसी भी व्यक्ति को अपने धर्म की प्रशंसा करते हुए दूसरे धर्म की निन्दा नहीं करनी चाहिए। प्रत्येक सम्प्रदाय का सम्मान करना ही वास्तविक धर्म है। यह विचार उस समय अत्यंत प्रगतिशील था, जब विभिन्न धार्मिक परंपराओं के बीच वैचारिक मतभेद विद्यमान थे।अशोक के धम्म में पारिवारिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों पर भी विशेष बल दिया गया। उन्होंने माता-पिता की सेवा, गुरुजनों का सम्मान, ब्राह्मणों एवं श्रमणों के प्रति आदर, मित्रों एवं संबंधियों के साथ सद्व्यवहार तथा सेवकों के प्रति न्यायपूर्ण व्यवहार को धम्म का अंग माना। इससे स्पष्ट होता है कि धम्म केवल आध्यात्मिक आदर्श नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन की व्यावहारिक आचार-संहिता भी था।

धम्म का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष लोककल्याण था। अशोक ने मानवों एवं पशुओं के लिए चिकित्सालयों की स्थापना, औषधियों की व्यवस्था, सड़कों के किनारे वृक्षारोपण, कुओं एवं विश्रामगृहों का निर्माण तथा जनसुविधाओं का विस्तार कराया। इन कार्यों को उन्होंने केवल प्रशासनिक दायित्व नहीं, बल्कि धम्म का अभिन्न अंग माना।अशोक के अनुसार धम्म का पालन किसी भय या दंड के कारण नहीं, बल्कि आत्मबोध एवं नैतिक चेतना के आधार पर होना चाहिए। इसी कारण उन्होंने धम्म के प्रचार हेतुधम्म-

महामात्रोंकी नियुक्ति की, जिनका कार्य समाज में नैतिक मूल्यों का प्रसार करना था।इस प्रकार स्पष्ट है कि अशोक का धम्म एक समन्वयवादी एवं सार्वभौमिक नैतिक दर्शन था, जिसका उद्देश्य व्यक्ति, समाज एवं राज्य के मध्य संतुलित एवं मानवीय संबंध स्थापित करना था।

धम्म का दार्शनिक आधार

सम्राट अशोक के धम्म का दार्शनिक आधार भारतीय चिंतन परंपरा की विभिन्न धाराओं से प्रभावित होते हुए भी अपनी मौलिकता के कारण विशिष्ट स्थान रखता है। यद्यपि अशोक बौद्ध धर्म से प्रेरित थे और उन्होंने बुद्ध के उपदेशों को आदर्श माना, फिर भी उनका धम्म केवल बौद्ध सिद्धांतों तक सीमित नहीं था। उन्होंने ऐसा नैतिक दर्शन प्रस्तुत किया जो सभी धर्मों, सम्प्रदायों तथा सामाजिक वर्गों के लिए समान रूप से स्वीकार्य हो सके।दार्शनिक दृष्टि से अशोक के धम्म का मूल आधारमानवतावाद (Humanism) है। उन्होंने मनुष्य को उसके धार्मिक, जातीय अथवा सामाजिक भेदों से ऊपर उठाकर एक नैतिक प्राणी के रूप में देखा। उनके विचार में प्रत्येक व्यक्ति का सर्वोच्च कर्तव्य मानवता की सेवा तथा सभी प्राणियों के प्रति करुणा का व्यवहार करना है। यही कारण है कि उनके अभिलेखों में प्राणिमात्र के प्रति दया, हिंसा का त्याग तथा जीवों की रक्षा पर विशेष बल दिया गया है।

अशोक के धम्म मेंअहिंसाका सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण है। यद्यपि उन्होंने पूर्ण अहिंसा का प्रतिपादन नहीं किया, फिर भी अनावश्यक हिंसा एवं पशुबलि का विरोध किया तथा युद्ध के स्थान पर शांति और संवाद को प्राथमिकता दी। कलिंग युद्ध के बाद उनका यह दृष्टिकोण और अधिक परिपक्व हुआ। उनके लिए वास्तविक विजय शत्रु को पराजित करना नहीं, बल्कि उसके हृदय को जीतना था। इसी कारण उन्होंनेधम्म-विजयको सर्वोच्च विजय बताया।दार्शनिक दृष्टि से धम्म का दूसरा महत्वपूर्ण आधारकरुणा एवं मैत्रीहै। बौद्ध दर्शन के अनुसार करुणा सभी प्राणियों के दुःख को दूर करने की भावना है। अशोक ने इसी सिद्धांत को राज्य की नीति का आधार बनाया। उन्होंने केवल मनुष्यों के लिए ही नहीं, बल्कि पशु-पक्षियों के संरक्षण के लिए भी अनेक व्यवस्थाएँ कीं। यह दृष्टिकोण उनके व्यापक नैतिक चिंतन का परिचायक है।

अशोक के धम्म मेंधार्मिक सहिष्णुताभी एक महत्वपूर्ण दार्शनिक तत्व है। उन्होंने यह स्वीकार किया कि सत्य तक पहुँचने के अनेक मार्ग हो सकते हैं। इसलिए किसी भी सम्प्रदाय के प्रति घृणा अथवा असहिष्णुता उचित नहीं है। उन्होंने परस्पर सम्मान, संवाद तथा सह-अस्तित्व को नैतिक जीवन का आधार माना। यह विचार आधुनिक बहुलतावादी समाज (Pluralistic Society) की अवधारणा से अत्यंत निकट है।धम्म का एक अन्य दार्शनिक पक्षनैतिक उत्तरदायित्वहै। अशोक के अनुसार मनुष्य की श्रेष्ठता उसके जन्म, जाति अथवा पद से नहीं, बल्कि उसके सदाचार से निर्धारित होती है। सत्य, आत्मसंयम,

दया, क्षमा, विनम्रता तथा सेवा-भाव ही वास्तविक धर्म हैं। उन्होंने बाह्य कर्मकाण्डों की अपेक्षा आंतरिक नैतिकता को अधिक महत्व दिया।

राजनीतिक दर्शन की दृष्टि से भी अशोक का धम्म अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने शासन को केवल शक्ति का माध्यम न मानकर लोकसेवा का साधन माना। राजा स्वयं को प्रजा का अभिभावक समझता था और उसका कर्तव्य प्रजा के नैतिक एवं भौतिक कल्याण की व्यवस्था करना था। इस प्रकार अशोक का धम्म नैतिक शासन (Moral Governance) की अवधारणा का प्रारंभिक एवं उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।आधुनिक संदर्भ में अशोक का दार्शनिक दृष्टिकोण वैश्विक शांति, मानवाधिकार, सामाजिक न्याय, धार्मिक सहिष्णुता तथा सतत् विकास जैसी अवधारणाओं के साथ गहन साम्य रखता है। उनका धम्म यह सिद्ध करता है कि नैतिकता, करुणा और सह-अस्तित्व पर आधारित समाज ही स्थायी शांति एवं समृद्धि की आधारशिला बन सकता है।इस प्रकार स्पष्ट है कि सम्राट अशोक का धम्म केवल एक ऐतिहासिक अवधारणा नहीं, बल्कि एक सार्वभौमिक दार्शनिक एवं नैतिक दृष्टिकोण है, जिसकी प्रासंगिकता आज भी यथावत बनी हुई है।

धम्म के नैतिक सिद्धांत

सम्राट अशोक द्वारा प्रतिपादित धम्म का मूल स्वरूप नैतिकता पर आधारित था। उनके धम्म का उद्देश्य किसी नए धर्म की स्थापना करना नहीं, बल्कि ऐसे सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों का विकास करना था जो व्यक्ति, समाज तथा राज्य के जीवन को अधिक मानवीय, शांतिपूर्ण एवं कल्याणकारी बना सकें। अशोक के धम्म में धार्मिक अनुष्ठानों, कर्मकाण्डों और दार्शनिक विवादों की अपेक्षा व्यावहारिक नैतिक जीवन को अधिक महत्व दिया गया है। उनके अभिलेखों से स्पष्ट होता है कि उन्होंने समाज में सदाचार, अनुशासन तथा मानवीय मूल्यों की स्थापना को ही धम्म का वास्तविक उद्देश्य माना।

(क) अहिंसा एवं प्राणिमात्र के प्रति करुणा

अशोक के धम्म का सर्वाधिक महत्वपूर्ण नैतिक सिद्धांत अहिंसा है। कलिंग युद्ध की विभीषिका ने उन्हें यह अनुभव कराया कि हिंसा केवल शारीरिक विनाश ही नहीं करती, बल्कि समाज की नैतिक चेतना को भी क्षीण कर देती है। इसलिए उन्होंने युद्ध और अनावश्यक हिंसा का त्याग करते हुए करुणा और दया को जीवन का आधार बनाया।

अशोक ने अपने प्रथम शिलालेख में अनेक पशुओं की हत्या पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा की तथा राजकीय भोजों में होने वाली पशुबलि को समाप्त किया। उन्होंने पशुओं के लिए औषधालयों की स्थापना तथा उनके संरक्षण की व्यवस्था भी की। इससे स्पष्ट होता है कि उनकी करुणा केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं थी, बल्कि समस्त प्राणिजगत तक विस्तृत थी।यह करुणा बौद्ध दर्शन के "बहुजन हिताय,

बहुजन सुखाय" के आदर्श से प्रेरित थी, किन्तु अशोक ने इसे शासन की व्यावहारिक नीति का भी अंग बनाया। आधुनिक मानवाधिकार तथा पशु-अधिकार की अवधारणाओं के संदर्भ में भी यह दृष्टिकोण अत्यंत प्रगतिशील माना जा सकता है।

(ख) सत्य, शील एवं सदाचार

अशोक के अनुसार किसी भी समाज की वास्तविक उन्नति नैतिक चरित्र पर निर्भर करती है। उन्होंने सत्यवादिता, ईमानदारी, आत्मसंयम तथा सदाचार को धम्म का आधार माना। उनके अभिलेखों में बार-बार यह संदेश मिलता है कि मनुष्य को अपने आचरण को शुद्ध एवं मर्यादित रखना चाहिए।अशोक ने केवल व्यक्तिगत नैतिकता पर ही बल नहीं दिया, बल्कि प्रशासनिक नैतिकता को भी समान महत्व प्रदान किया। उन्होंने अधिकारियों को निष्पक्ष, न्यायप्रिय तथा सत्यनिष्ठ बनने की प्रेरणा दी। उनके विचार में नैतिकता केवल व्यक्तिगत गुण नहीं, बल्कि शासन व्यवस्था की भी आधारशिला है।

(ग) माता-पिता, गुरु एवं वृद्धजनों का सम्मान

अशोक के धम्म में पारिवारिक मूल्यों को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उन्होंने अपने अभिलेखों में माता-पिता की सेवा, गुरुजनों के प्रति सम्मान तथा वृद्ध व्यक्तियों की देखभाल को धर्म का आवश्यक अंग बताया है। उनके अनुसार परिवार ही नैतिक शिक्षा का प्रथम केंद्र है, जहाँ से व्यक्ति में अनुशासन, सेवा तथा उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है।यह विचार भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के अनुरूप है, जिसमें माता-पिता एवं गुरु को सर्वोच्च सम्मान प्रदान किया गया है। अशोक ने इन मूल्यों को केवल धार्मिक शिक्षा तक सीमित न रखकर राज्य की नैतिक नीति का भी अंग बनाया।

(घ) दया, दान एवं सेवा की भावना

अशोक के धम्म में दया, परोपकार एवं सेवा को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उन्होंने समाज के कमजोर, निर्धन, वृद्ध एवं असहाय व्यक्तियों के प्रति संवेदनशील व्यवहार का समर्थन किया। उन्होंने दान को केवल भौतिक वस्तुओं के वितरण तक सीमित नहीं माना, बल्कि नैतिक शिक्षा, सदाचार तथा लोककल्याण को सर्वोच्च दान बताया।उन्होंने अनेक स्थानों पर चिकित्सालयों, धर्मशालाओं, कुओं तथा विश्रामगृहों का निर्माण कराया। मार्गों के किनारे वृक्षारोपण तथा जल-सुविधाओं की व्यवस्था भी लोकसेवा की भावना का ही उदाहरण है। इससे स्पष्ट होता है कि अशोक के लिए दान केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व था।

(ङ) धार्मिक सहिष्णुता

अशोक के धम्म की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में धार्मिक सहिष्णुता प्रमुख है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि किसी भी व्यक्ति को अपने धर्म की प्रशंसा करते हुए दूसरे धर्म की निन्दा नहीं करनी चाहिए। सभी सम्प्रदायों के प्रति सम्मान एवं संवाद ही वास्तविक धर्म है।द्वादश शिलालेख में उन्होंने विभिन्न

धार्मिक परंपराओं के बीच सद्भाव एवं पारस्परिक सम्मान का संदेश दिया। यह विचार आधुनिक धर्मनिरपेक्षता तथा बहुलतावाद (Pluralism) की अवधारणा से अत्यंत निकट है।

(च) आत्मसंयम एवं नैतिक अनुशासन

अशोक के अनुसार आत्मसंयम मनुष्य के नैतिक विकास का आधार है। उन्होंने क्रोध, लोभ, अहंकार तथा हिंसा जैसी प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखने की शिक्षा दी। उनके धम्म में आत्मानुशासन को बाह्य नियंत्रण से अधिक महत्वपूर्ण माना गया है।उनका विश्वास था कि यदि व्यक्ति स्वयं नैतिक जीवन अपनाएगा, तभी समाज एवं राज्य में वास्तविक शांति और व्यवस्था स्थापित हो सकेगी।

(छ) सामाजिक समरसता एवं लोककल्याण

अशोक का धम्म सामाजिक समानता, पारस्परिक सहयोग तथा लोककल्याण पर आधारित था। उन्होंने जाति, सम्प्रदाय एवं वर्ग के आधार पर भेदभाव का समर्थन नहीं किया। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति समान सम्मान एवं न्याय का अधिकारी है।इस प्रकार स्पष्ट होता है कि अशोक के धम्म के नैतिक सिद्धांत व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक व्यवस्था तथा प्रशासन—तीनों क्षेत्रों में समान रूप से लागू होते थे। यही कारण है कि उनका धम्म आज भी सार्वभौमिक नैतिक दर्शन के रूप में प्रासंगिक है।

5. अशोक के अभिलेखों में धम्म

सम्राट अशोक के धम्म को समझने का सबसे प्रामाणिक आधार उनके शिलालेख एवं स्तंभलेख हैं। इन अभिलेखों के माध्यम से उन्होंने सीधे जनता को संबोधित किया तथा अपने नैतिक आदर्शों, प्रशासनिक नीतियों और लोककल्याणकारी कार्यक्रमों की जानकारी दी। भारतीय इतिहास में पहली बार किसी शासक ने अपने विचारों को पत्थरों एवं स्तंभों पर अंकित कर व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचाने का प्रयास किया।अशोक के अभिलेख ब्राह्मी, खरोष्ठी, यूनानी तथा अरामाइक लिपियों में प्राप्त होते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि उनका उद्देश्य अपने संदेश को साम्राज्य के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाना था।

प्रथम शिलालेख

इस शिलालेख में पशुबलि एवं अनावश्यक पशु-हत्या को सीमित करने का उल्लेख मिलता है। अशोक ने स्वयं राजकीय रसोई में पशुओं की हत्या कम करने का आदेश दिया। यह उनके अहिंसावादी दृष्टिकोण का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

द्वितीय शिलालेख

इस अभिलेख में मानव एवं पशुओं के लिए चिकित्सा सुविधाओं की व्यवस्था, औषधीय पौधों का रोपण तथा जल-सुविधाओं की स्थापना का उल्लेख मिलता है। यह धम्म के लोककल्याणकारी स्वरूप को दर्शाता है।

तृतीय शिलालेख

इसमें माता-पिता की सेवा, ब्राह्मणों एवं श्रमणों के प्रति सम्मान, सत्यवादिता तथा सदाचार का पालन करने की शिक्षा दी गई है। यह स्पष्ट करता है कि अशोक नैतिक शिक्षा को शासन की प्राथमिकता मानते थे।

पंचम शिलालेख

यह अभिलेख विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमेंधम्म-महामात्रोंकी नियुक्ति का उल्लेख मिलता है। इन अधिकारियों का कार्य समाज में नैतिक मूल्यों का प्रचार-प्रसार करना तथा जनता की समस्याओं का समाधान करना था। वे महिलाओं, वृद्धों, बंदियों तथा सीमांत क्षेत्रों के लोगों के कल्याण की भी देखरेख करते थे।

सप्तम शिलालेख

इस शिलालेख में धम्म के व्यापकस्वरूप का वर्णन किया गया है। इसमें आत्मसंयम, करुणा, सहिष्णुता तथा सदाचार को धम्म का आधार बताया गया है। अशोक ने स्पष्ट किया कि धम्म का उद्देश्य सम्पूर्ण मानव समाज का नैतिक उत्थान है।

द्वादश शिलालेख

धार्मिक सहिष्णुता के दृष्टिकोण से यह शिलालेख अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें अशोक ने सभी सम्प्रदायों के प्रति सम्मान, संवाद एवं सहिष्णुता का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि अपने धर्म का सम्मान करने का सर्वोत्तम उपाय अन्य धर्मों का भी आदर करना है।

स्तंभलेख

अशोक के स्तंभलेखों में भी धम्म के विभिन्न पक्षों का विस्तृत वर्णन मिलता है। इनमें न्यायपूर्ण शासन, प्रशासनिक उत्तरदायित्व, दंड नीति में उदारता तथा प्रजा के प्रति संवेदनशील व्यवहार पर बल दिया गया है।अभिलेखों से यह स्पष्ट होता है कि अशोक का धम्म किसी संप्रदाय-विशेष का धार्मिक उपदेश नहीं था, बल्कि नैतिक शासन एवं सामाजिक समरसता का व्यावहारिक कार्यक्रम था।

धम्म और शासन व्यवस्था

सम्राट अशोक भारतीय इतिहास के उन विरले शासकों में थे जिन्होंने शासन को केवल राजनीतिक शक्ति का माध्यम न मानकर नैतिक उत्तरदायित्व का साधन बनाया। उनके शासन का आधार केवल दंड और कानून नहीं, बल्कि नैतिकता, करुणा, न्याय तथा लोककल्याण था। यही कारण है कि उनका प्रशासन विश्व इतिहास में "नैतिक शासन" (Ethical Governance) का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है।कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने विजय की नीति का स्थानधम्म-विजयको दिया। उन्होंने घोषणा की कि

राज्य की वास्तविक शक्ति उसकी सेना में नहीं, बल्कि नैतिक नागरिकों एवं न्यायपूर्ण प्रशासन में निहित है।धम्म को प्रभावी बनाने के लिए उन्होंनेधम्म-महामात्रोंकी नियुक्ति की। इन अधिकारियों का कार्य केवल प्रशासनिक नियंत्रण नहीं, बल्कि जनता के नैतिक एवं सामाजिक कल्याण की देखरेख करना था। वे प्रजा की समस्याएँ सुनते थे, धार्मिक सद्भाव बनाए रखते थे तथा समाज में नैतिक मूल्यों का प्रचार करते थे।

अशोक ने न्याय व्यवस्था में भी मानवीय दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने दंड देने से पूर्व अपराधी को आत्मचिंतन एवं सुधार का अवसर प्रदान करने की व्यवस्था की। मृत्युदंड पाए व्यक्तियों को भी कुछ समय दिया जाता था ताकि वे अपने परिवार से मिल सकें अथवा धार्मिक कर्तव्यों का पालन कर सकें। यह नीति उनकी संवेदनशील शासन-व्यवस्था को दर्शाती है।लोककल्याण उनके प्रशासन का प्रमुख उद्देश्य था। उन्होंने सड़कों के किनारे वृक्ष लगवाए, कुओं का निर्माण कराया, यात्रियों के लिए विश्रामगृह बनवाए तथा मानव एवं पशुओं के लिए चिकित्सालय स्थापित किए। ये सभी कार्य धम्म के व्यावहारिक स्वरूप के उदाहरण हैं।

अशोक ने प्रशासनिक अधिकारियों को नियमित रूप से जनता के बीच जाने तथा उनकी समस्याओं को सुनने का निर्देश दिया। स्वयं सम्राट भी प्रजा के हितों के प्रति अत्यंत सजग रहते थे। उनके अभिलेखों से ज्ञात होता है कि वे किसी भी समय जनता के कार्यों पर विचार करने के लिए तैयार रहते थे।धार्मिक नीति के क्षेत्र में भी अशोक ने पूर्ण सहिष्णुता अपनाई। उन्होंने बौद्ध धर्म को व्यक्तिगत रूप से स्वीकार किया, किन्तु राज्य पर किसी एक धर्म को आरोपित नहीं किया। उन्होंने ब्राह्मणों, श्रमणों, जैनों तथा अन्य सम्प्रदायों के प्रति समान सम्मान का व्यवहार किया। इस प्रकार उनका शासन धार्मिक समन्वय और सामाजिक सद्भाव का आदर्श उदाहरण बन गया।आधुनिक प्रशासनिक सिद्धांतों—जैसे सुशासन (Good Governance), उत्तरदायित्व (Accountability), पारदर्शिता (Transparency), जनकल्याण (Public Welfare) तथा नैतिक नेतृत्व (Ethical Leadership)—के अनेक तत्व अशोक की शासन-व्यवस्था में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। इसलिए सम्राट अशोक का धम्म केवल ऐतिहासिक अवधारणा नहीं, बल्कि आज भी आदर्श शासन व्यवस्था के लिए प्रेरणास्रोत बना हुआ है।

समकालीन संदर्भ में धम्म की प्रासंगिकता

सम्राट अशोक द्वारा प्रतिपादित धम्म केवल प्राचीन भारत की सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों तक सीमित नहीं था, बल्कि वह ऐसे सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों पर आधारित था जिनकी उपयोगिता प्रत्येक युग में बनी रहती है। वर्तमान समय में विश्व अनेक जटिल चुनौतियों—जैसे हिंसा, आतंकवाद, धार्मिक कट्टरता, सामाजिक असमानता, नैतिक पतन, पर्यावरणीय संकट, राजनीतिक अस्थिरता तथा

वैश्विक संघर्ष—का सामना कर रहा है। ऐसे समय में अशोक का धम्म मानवता को नैतिक दिशा प्रदान करने वाला एक व्यावहारिक दर्शन सिद्ध होता है। अशोक ने लगभग तेईस शताब्दियों पूर्व जिन मूल्यों—अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, सत्य, आत्मसंयम, परस्पर सम्मान तथा लोककल्याण—को शासन और समाज का आधार बनाया था, वे आज भी समान रूप से प्रासंगिक हैं।

आधुनिक विश्व में हिंसा और युद्ध की घटनाएँ निरंतर बढ़ रही हैं। विभिन्न देशों के बीच राजनीतिक संघर्ष, सीमा विवाद, परमाणु हथियारों की होड़ तथा आतंकवादी गतिविधियाँ विश्वशांति के लिए गंभीर चुनौती बन चुकी हैं। ऐसी परिस्थितियों में अशोक काधम्म-विजयका सिद्धांत विशेष महत्व रखता है। कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने यह स्वीकार किया कि युद्ध की वास्तविक उपलब्धि विनाश और पीड़ा के अतिरिक्त कुछ नहीं होती। इसलिए उन्होंने सैन्य विजय के स्थान पर नैतिक विजय को श्रेष्ठ माना। यह विचार आज के अंतरराष्ट्रीय संबंधों में संवाद, कूटनीति तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की भावना को प्रोत्साहित करता है।

धार्मिक असहिष्णुता और सांप्रदायिक संघर्ष आज विश्व के अनेक देशों में सामाजिक तनाव का प्रमुख कारण हैं। अशोक ने अपने द्वादश शिलालेख में स्पष्ट कहा कि किसी भी व्यक्ति को अपने धर्म का सम्मान करते हुए दूसरे धर्म की निन्दा नहीं करनी चाहिए। उनके अनुसार सभी धार्मिक परम्पराओं का सम्मान तथा पारस्परिक संवाद ही वास्तविक धर्म है। वर्तमान भारत जैसे बहुधार्मिक और बहुसांस्कृतिक राष्ट्र में यह सिद्धांत सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय एकता और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज जब धार्मिक पहचान के आधार पर विभाजन और वैमनस्य की प्रवृत्ति बढ़ रही है, तब अशोक का सहिष्णुता का संदेश सामाजिक सद्भाव की सुदृढ़ आधारशिला प्रस्तुत करता है।

समकालीन समाज में नैतिक मूल्यों का निरंतर ह्रास भी एक गंभीर चिंता का विषय है। भौतिकवाद, उपभोक्तावाद तथा अत्यधिक प्रतिस्पर्धा ने सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को प्रभावित किया है। भ्रष्टाचार, अनैतिक व्यापार, प्रशासनिक अनियमितताएँ तथा सामाजिक अपराध इसी नैतिक संकट के परिणाम हैं। अशोक का धम्म व्यक्ति के चरित्र-निर्माण पर विशेष बल देता है। सत्य, शील, आत्मसंयम, दया और सदाचार जैसे नैतिक गुण आज भी व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक जीवन को सुदृढ़ बनाने के लिए आवश्यक हैं। यदि इन मूल्यों को शिक्षा, प्रशासन तथा सामाजिक जीवन में पुनः प्रतिष्ठित किया जाए तो नैतिक संकट को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में सुशासन (Good Governance) की अवधारणा आज अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, जनभागीदारी, न्याय तथा लोककल्याण इसके प्रमुख आधार हैं। आश्चर्यजनक रूप से इन सभी तत्वों का स्वरूप अशोक के प्रशासन में स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होंने

धम्म-महामात्रों की नियुक्ति करके प्रशासन को जनता के निकट पहुँचाया तथा अधिकारियों को प्रजा के प्रति संवेदनशील और उत्तरदायी बनने का निर्देश दिया। उन्होंने न्याय में मानवीय दृष्टिकोण अपनाया तथा जनकल्याण को शासन का सर्वोच्च उद्देश्य बनाया। आज के लोकतांत्रिक शासन में भी यदि प्रशासन नैतिक उत्तरदायित्व तथा जनहित को सर्वोपरि मानकर कार्य करे, तो सुशासन की अवधारणा अधिक प्रभावी रूप से लागू की जा सकती है।

मानवाधिकारों की अवधारणा आधुनिक युग की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक मानी जाती है। प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा, समानता तथा स्वतंत्रता की रक्षा मानवाधिकारों का मूल उद्देश्य है। यद्यपि अशोक के समय आधुनिक मानवाधिकार की अवधारणा विकसित नहीं हुई थी, तथापि उनके धम्म में मानव-गरिमा, करुणा तथा समान व्यवहार के सिद्धांत स्पष्ट रूप से विद्यमान हैं। उन्होंने सभी वर्गों के लोगों—स्त्रियों, वृद्धों, सेवकों, कैदियों तथा सीमांत क्षेत्रों में रहने वाले लोगों—के कल्याण की व्यवस्था की। उनका यह दृष्टिकोण आधुनिक मानवाधिकारों की भावना के अत्यंत निकट है।

अशोक का धम्म केवल मनुष्यों के प्रति ही नहीं, बल्कि समस्त जीव-जगत के प्रति करुणा का संदेश देता है। उन्होंने पशु-हत्या पर नियंत्रण लगाया, पशुओं के लिए चिकित्सालय स्थापित किए तथा अनेक जीवों के संरक्षण की व्यवस्था की। वर्तमान समय में जब पर्यावरण प्रदूषण, जैव विविधता का विनाश तथा जलवायु परिवर्तन वैश्विक संकट का रूप ले चुके हैं, तब अशोक की यह पर्यावरण-संवेदनशील दृष्टि अत्यंत प्रेरणादायक प्रतीत होती है। वृक्षारोपण, जल संरक्षण, पशु संरक्षण तथा प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग की उनकी नीति आज के सतत विकास (Sustainable Development) के सिद्धांतों के अनुरूप दिखाई देती है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा संयुक्त राष्ट्र संघ आज मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक कल्याण तथा मानवीय विकास पर विशेष बल दे रहे हैं। अशोक ने भी अपने शासनकाल में केवल आर्थिक विकास को महत्व नहीं दिया, बल्कि नागरिकों के नैतिक और मानसिक उत्थान को भी समान महत्व प्रदान किया। उन्होंने अस्पतालों, औषधालयों, विश्रामगृहों तथा जल-सुविधाओं की व्यवस्था कर लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा को मूर्त रूप दिया। यह दृष्टिकोण आधुनिक कल्याणकारी राज्य (Welfare State) की अवधारणा का प्रारम्भिक स्वरूप माना जा सकता है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी अशोक का धम्म महत्वपूर्ण प्रेरणा प्रदान करता है। वर्तमान शिक्षा नीति में केवल ज्ञानार्जन ही नहीं, बल्कि मूल्यपरक शिक्षा, नैतिकता, सहिष्णुता, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा वैश्विक नागरिकता पर बल दिया जा रहा है। अशोक का धम्म इन्हीं मूल्यों को विकसित करने का प्रयास करता है। यदि विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में करुणा, सह-अस्तित्व, सत्यनिष्ठा तथा सामाजिक सेवा जैसे

मूल्यों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाए, तो एक उत्तरदायी एवं नैतिक नागरिक समाज का निर्माण संभव है।

वैश्वीकरण के युग में विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और सभ्यताओं के बीच संवाद की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। अशोक का धम्म सांस्कृतिक सह-अस्तित्व और पारस्परिक सम्मान की भावना को प्रोत्साहित करता है। उन्होंने विभिन्न देशों में धम्म-दूत भेजकर केवल बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं किया, बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान, शांति तथा मैत्रीके संबंधों को भी विकसित किया। आज के वैश्विक परिदृश्य में यह सांस्कृतिक कूटनीति (Cultural Diplomacy) और वैश्विक सहयोग की भावना को सुदृढ़ करने में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती है।भारतीय संविधान में वर्णित न्याय, स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुत्व के आदर्श भी अशोक के धम्म की नैतिक भावना से साम्य रखते हैं। धार्मिक स्वतंत्रता, सामाजिक समानता तथा सभी नागरिकों के प्रति समान व्यवहार का सिद्धांत अशोक के शासन में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस दृष्टि से अशोक का धम्म भारतीय लोकतांत्रिक मूल्यों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को भी सुदृढ़ करता है।अंततः कहा जा सकता है कि अशोक का धम्म केवल अतीत की ऐतिहासिक धरोहर नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए एक व्यावहारिक नैतिक मार्गदर्शक है। यह व्यक्ति, समाज, राज्य तथा विश्व समुदाय के बीच संतुलन स्थापित करने का संदेश देता है। यदि समकालीन समाज अशोक के धम्म में निहित करुणा, सहिष्णुता, नैतिकता, सामाजिक न्याय तथा लोककल्याण के सिद्धांतों को व्यवहार में अपनाए, तो अनेक सामाजिक, राजनीतिक तथा वैश्विक समस्याओं का समाधान अधिक प्रभावी ढंग से संभव हो सकता है।

निष्कर्ष

सम्राट अशोक भारतीय इतिहास के उन विरले शासकों में हैं जिन्होंने राजनीतिक शक्ति को नैतिक उत्तरदायित्व के साथ जोड़कर शासन की एक नवीन अवधारणा प्रस्तुत की। कलिंग युद्ध के पश्चात उनके जीवन में जो वैचारिक परिवर्तन आया, उसने न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन को परिवर्तित किया, बल्कि सम्पूर्ण भारतीय इतिहास की दिशा को भी प्रभावित किया। उन्होंने यह अनुभव किया कि स्थायी विजय तलवार की शक्ति से नहीं, बल्कि नैतिक आदर्शों, मानवीय संवेदनाओं और लोककल्याणकारी दृष्टिकोण से प्राप्त की जा सकती है। इसी अनुभव के परिणामस्वरूप उन्होंने धम्म की स्थापना की, जो किसी विशेष धर्म या सम्प्रदाय का सिद्धांत न होकर सार्वभौमिक नैतिक जीवन-पद्धति थी।

अशोक के धम्म का मूल आधार करुणा, अहिंसा, सत्य, आत्मसंयम, सहिष्णुता, दया, परोपकार तथा सामाजिक उत्तरदायित्व था। उन्होंने धर्म को कर्मकाण्डों और बाह्य आडम्बरों से मुक्त करके व्यावहारिक नैतिकता का स्वरूप प्रदान किया। उनके अनुसार वास्तविक धर्म वही है जो व्यक्ति के

चरित्र का निर्माण करे, समाज में समरसता स्थापित करे तथा राज्य को लोककल्याण की दिशा में प्रेरित करे। यही कारण है कि उनके धम्म में व्यक्तिगत आचरण, पारिवारिक उत्तरदायित्व, सामाजिक सद्भाव तथा प्रशासनिक नैतिकता का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।अशोक के शिलालेख और स्तंभलेख उनके धम्म की सबसे प्रामाणिक अभिव्यक्ति हैं। इन अभिलेखों से स्पष्ट होता है कि उन्होंने धम्म को केवल वैचारिक स्तर पर ही नहीं रखा, बल्कि उसे प्रशासनिक व्यवस्था, न्याय प्रणाली, सामाजिक नीति तथा लोककल्याणकारी कार्यक्रमों में भी प्रभावी रूप से लागू किया। धम्म-महामात्रों की नियुक्ति, चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार, वृक्षारोपण, जल-सुविधाओं की व्यवस्था, पशु संरक्षण, धार्मिक सहिष्णुता तथा जनसंपर्क आधारित प्रशासन इस बात के प्रमाण हैं कि अशोक का धम्म व्यवहारिक शासन-दर्शन था।

दार्शनिक दृष्टि से अशोक का धम्म बौद्ध विचारधारा से प्रेरित होते हुए भी उससे अधिक व्यापक और सार्वभौमिक स्वरूप ग्रहण करता है। इसमें किसी विशेष धार्मिक मत की प्रधानता नहीं है, बल्कि समस्त मानव समाज के नैतिक उत्थान का लक्ष्य निहित है। उन्होंने धर्म को मानव-कल्याण का माध्यम बनाया तथा नैतिक मूल्यों को शासन की आधारशिला के रूप में स्थापित किया। यही विशेषता उन्हें विश्व इतिहास के महानतम नैतिक शासकों की श्रेणी में स्थापित करती है।समकालीन संदर्भ में भी अशोक का धम्म अत्यंत प्रासंगिक है। आज विश्व जिस प्रकार हिंसा, युद्ध, धार्मिक असहिष्णुता, पर्यावरणीय संकट, नैतिक पतन और सामाजिक असमानता जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है, उनमें अशोक का करुणा, सह-अस्तित्व, संवाद, अहिंसा तथा लोककल्याण का संदेश नई दिशा प्रदान करता है। सुशासन, मानवाधिकार, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक न्याय तथा वैश्विक शांति जैसी आधुनिक अवधारणाओं के साथ उनके धम्म का गहरा साम्य दिखाई देता है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सम्राट अशोक का धम्म केवल मौर्यकालीन शासन की नीति नहीं था, बल्कि वह एक ऐसा शाश्वत नैतिक दर्शन है जिसकी उपयोगिता आज भी अक्षुण्ण है। यह व्यक्ति, समाज और राज्य के मध्य नैतिक संतुलन स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त करता है तथा मानवता को शांति, सहिष्णुता, करुणा और न्याय पर आधारित जीवन-दृष्टि प्रदान करता है। इसी कारण अशोक का धम्म भारतीय सांस्कृतिक विरासत की अमूल्य धरोहर होने के साथ-साथ विश्व मानवता के लिए भी एक स्थायी प्रेरणास्रोत बना हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गोयल, श्रीराम. (1992) नंद-मौर्य साम्राज्य का इतिहास।कुसुमांजलि प्रकाशन।
2. चक्रवर्ती, रणवीर. (2020) भारतीय इतिहास का आदिकाल (प्राचीनतम पर्व से 600 ईस्वी तक)।ओरिएंट ब्लैकस्वॉन प्रा. लि.
3. पाण्डेय, डॉ. राजबली. (2022) अशोक के अभिलेख।ज्ञानमंडल लिमिटेड।
4. बापट, पी. वी. (सम्पा.). (1997) बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष (द्वितीय संस्करण)।प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।
5. मुखर्जी, डॉ. राधाकुमुद. (1962) अशोक।मोतीलाल बनारसीदास।
6. मुखर्जी, डॉ. राधाकुमुद. (1962) प्राचीन भारत।राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
7. शर्मा, रामशरण. (2004) प्रारंभिक भारत का परिचय।ओरिएंट ब्लैकस्वॉन प्रा. लि.
8. सिंह, उपिन्दर. (2024) प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास।पियर्सन इंडिया।
9. थापर, रोमिला. (2007) मौर्य साम्राज्य का पुनरावलोकन (अनुवाद: प्रदीप कांत चौधरी)।ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्रा. लि.
10. थापर, रोमिला. (1977) अशोक तथा मौर्य साम्राज्य का पतन।ग्रंथ शिल्पी।
11. गोखले, बी. बी. (1966) बौद्ध धर्म और अशोक।एशिया पब्लिशिंग हाउस।
12. कोसाम्बी, डी. डी. (1956) भारतीय इतिहास के अध्ययन का परिचय (हिंदी अनुवाद)।पॉपुलर प्रकाशन।
13. सरकार, डी. सी. (1967) भारतीय इतिहास एवं सभ्यता से संबंधित चयनित अभिलेख (भाग–1)।कलकत्ता विश्वविद्यालय।